17 जून 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI प्रतिदिन
सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रातः 7.00 से 7.30 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 6 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (द्वितीय), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

49वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द संपन्न

● देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 1500 से अधिक एवं सैंकड़ों स्थानीय आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में लाभान्वित ●प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 16 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित ● शिविर में लगभग 75 विद्वानों द्वारा धर्मप्रभावना।

मेरठ (उ.प्र.) : यहाँ तीर्थंकर महावीर मार्ग स्थित जैन बोर्डिंग हाउस में रविवार, दिनांक 24 मई से बुधवार, दिनांक 10 जून तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, मेरठ द्वारा आयोजित 18 दिवसीय 49वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अत्यंत भव्यता एवं हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

शिविर उद्घाटन के समाचार 2 जून वाले अंक में प्रकाशित किये जा चुके हैं। विस्तार से समाचार निम्नप्रकार से हैं -

प्रात:कालीन प्रवचन - प्रतिदिन आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के अतिरिक्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा 'मैं स्वयं भगवान हूँ' विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये।

रात्रिकालीन प्रवचन - ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा ज्ञानस्वभाव विषय पर प्रतिदिन हुये प्रवचनों के पूर्व पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली, पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ के विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये।

दोपहर की व्याख्यानमाला में - पण्डित नरेन्द्रजी जैन जबलपुर, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, डॉ. दीपकजी वैद्य जयपुर, पण्डित निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित रितेशजी शास्त्री डडूका, पण्डित राजेशजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सतीशजी मंगलायतन, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित विनीतजी अलीगढ, पण्डित शाकुलजी शास्त्री मेरठ, पण्डित जिनेशजी शेठ मुम्बई आदि विद्वानों के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए।

प्रशिक्षण कक्षायें - बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर व पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने ली।

प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर व पण्डित निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर द्वारा ली गई।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित निखलेशजी दलपतपुर, पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित सतीशजी शास्त्री अलीगढ, पण्डित धमेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित रीतेशजी डडूका, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित सौरभजी शास्त्री कोटा, पण्डित जिनेशजी शेठ मुम्बई, पण्डित विवेकजी शास्त्री अमरमऊ, श्रीमती कमलाबाई भारिल्ल जयपुर, श्रीमती रंजनाजी बंसल अमलाई, श्रीमती लता जैन देवलाली, श्रीमती मोना भारिल्ल जयपुर, श्रीमती स्तुति जैन जयपुर का सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रात:कालीन प्रौढकक्षायें - पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा आदि विद्वानों द्वारा ली गईं।

प्रौढ़ कक्षायें - प्रात:काल निमित्त-उपादान की कक्षा ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा एवं दोपहर में तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं क्रमबद्धपर्याय की कक्षा पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली ने ली।

बालवर्ग हेतु प्रतिदिन तीनों समय अनेक कक्षाओं का आयोजन किया गया। इन कक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई एवं आराध्य टडैया मुम्बई के निर्देशन में प्रशिक्षणार्थी अध्यापकों द्वारा किया गया, जिसमें सैंकड़ों बच्चे सम्मिलित हुये। इन बालकक्षाओं के बालकों द्वारा प्रत्येक दिन अनेक रोचक आध्यात्मिक संवाद प्रस्तुत किये गये, जिनका निर्देशन डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया व श्री आराध्य टडैया द्वारा किया गया।

इस शिविर की सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि इसके आयोजकों ने सभी को **'दान के लिये नहीं ज्ञान के लिये पधारें'** इस लक्ष्य से आमंत्रित किया। सभी को सभी प्रकार की सुन्दरतम व्यवस्थायें उपलब्ध करायी गयीं। पूरे दिन साहित्य में 50% की छूट रखी गयी और किसी भी प्रकार की दान राशि की अपील और घोषणा मंच से नहीं की गई।

(शेष पृष्ठ 6 पर ...)

सम्पादकीय –

विज्ञान और विद्या की हुई वार्ता

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

साहस बटोरते हुये विद्या ने कहा –''तुम मेरी चिन्ता मत करो। मैं एक-एक की कमजोरी जानती हूँ। वे तुम्हारा संरक्षण पाकर ही बाहर घूमते दिखाई दे रहे हैं। तुम्हारे मित्र होने के कारण ही मैंने उन पर कोई कानूनी कार्यवाही नहीं की, अन्यथा अब तक तो मैं उन्हें कभी की हवालात की हवा खिला देती।''

विद्या ने बात जारी रखते हुये आगे कहा –''हाँ, तुम्हारा यह सोचना सही है कि वे तुम्हें आसानी से नहीं छोड़ेंगे; क्योंकि सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी को कोई भी आसानी से नहीं छोड़ता। पर, यदि तुम चाहोगे तो उसका भी उपाय मेरे पास है।

पर अभी उनके छोड़ने न छोड़ने की बात ही कहाँ है ? अभी तो समस्या यह है कि तुम ही उनका साथ नहीं छोड़ना चाहते हो। क्यों मैं ठीक कहती हूँ न ?''

''नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं है विद्या ! मैं तुम्हारे माथे पर हाथ रखकर प्रतिज्ञा कर चुका हूँ न ? कि अब मैं उनका साथ नहीं दूंगा। कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े, पर अब मैं उनके संग नहीं रहूँगा।''

विज्ञान की भावुकता में ली गई प्रतिज्ञा को पक्का कराने की नियत से विद्या ने कहा –''हे प्रियवर ! भावुकतावश ये भीष्म प्रतिज्ञायें कर लेना एक बात है और उन्हें आजीवन निभाना दूसरी बात; अत: पहले तुम अपने-आप को तो पक्का कर लो। तुम्हें पता है तुम्हारी ये भीष्मप्रतिज्ञायें पहले कितनी बार भंग हो चुकी हैं ? वह तो मैं ही हूँ, जो तुम्हारे साथ निभ रही हूँ। कोई और ऐसी-वैसी होती तो बेचारी कभी की बेमौत मर गई होती।''

''विद्या ! तुम ठीक कहती हो। मैंने तुम्हें बहुत सताया। एक तुम्हीं हो जो आशा की ज्योति जलाये चुपचाप सब सहती रही, हिम्मत नहीं हारी।

अब तक जो हुआ उसके बारे में तो क्या कहूँ – पर अब मैं तुम्हें एक बार फिर विश्वास दिलाता हूँ कि अब मैं ऐसी कोई भूल नहीं करूँगा, जिससे तुम्हें दु:ख हो और मुझे पछताना पड़े।''

कुछ हँसी के मूड में आती हुई विद्या ने कहा –''विज्ञान ! तुम बातें तो बहुत अच्छी कर लेते हो। इन्हीं मीठी-मीठी बातों में आकर तो मैं तुम्हारे चक्कर में आ गई थी और तुम्हें अपना दिल दे बैठी। खैर ! कोई बात नहीं, अब तक जो हुआ सो तो हुआ पर अब इसकी पुनरावृत्ति न हो। सुबह का भूला यदि शाम को घर आ जाता है तो भूला नहीं कहलाता।

मैं तो यही कामना कर सकती हूँ कि भगवान ! ऐसे पुरुषों को शीघ्र सद्बुद्धि आवे।''

''अरे विद्या ! अब मैं कह कर नहीं, करके ही दिखाऊँगा।

अब मेरी बातों में तुम्हें ऐसे विश्वास नहीं आयेगा। आये भी क्यों ? मैंने स्वयं ही तो अपना विश्वास खोया है। तुम ही क्या ? आज कोई भी तो मुझ पर विश्वास नहीं करता।

विद्या ! कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि यदि मेरे मम्मी-पापा ने मुझे हॉस्टल में नहीं भेजा होता तो शायद मुझे ये दिन नहीं देखने पड़ते। काश ! मैं भी सुदर्शन और ज्ञान की भाँति ही किसी ऐसे विद्यालय में पढता, जहाँ लौकिक शिक्षा के साथ-साथ सदाचार के संस्कार भी मिलते।''

''देखो विज्ञान ! तुम मम्मी-पापा को दोष नहीं दे सकते। उन्होंने तो तुम्हारे हित के लिये ही पानी की तरह पैसा बहाकर अच्छे से अच्छे स्कूल और राजशाही हॉस्टल में प्रविष्ट कराया था, ताकि तुम्हारा शारीरिक और बौद्धिक विकास सर्वोत्तम हो। वे तो यह चाहते थे कि 'मेरा बेटा बड़ा व्यापारी बने, विदेशों में जाकर भी व्यापार करे,' इसीलिये तो उन्होंने अंग्रेजी भाषा और विदेशी संस्कृति व सभ्यता से तुम्हें परिचित कराया है।

कोई माता-पिता यदि अपने आंगन में कुआँ खुदवाता है तो इसलिये नहीं कि उसकी सन्तान उसमें डूब मरे, बल्कि इसलिये कि पीढी-दर-पीढी सबको सदैव शीतल जल उपलब्ध रहे। यदि हम अपनी नादानी से उसमें गिर पड़े तो इसमें उन बेचारों का क्या दोष है ?

तुम्हें याद होगा – तुम्हारे पापा ने एक बार स्कूल के वार्षिकोत्सव पर अपना अध्यक्षीय भाषण देते हुए यह भी तो कहा था कि 'गुलाब में फूल भी होते हैं और काँटे भी; पर तुम्हें उससे केवल फूल ग्रहण करना है, काँटे नहीं। काँटों से तो उल्टा बचना है; क्योंकि ऐसा गुलाब का कोई पौधा नहीं, जिसमें फूल ही फूल हो, कांटे न हो। अत: सबको फूलों और कांटों की पहचान अवश्य होनी चाहिये। यह तो हमारे-तुम्हारे विवेक पर ही निर्भर करता है कि हम क्या चुनते हैं ? केवल कांटों को कोसकर, उन्हें बुरा-भला कहकर हम उनके कष्टों से नहीं बच सकते। दूसरों को

दोष देने वाले कभी अपनी उन्नति नहीं कर सकते। क्या तुम यह सब भूल गये ?''

अपना स्वयं का उदाहरण प्रस्तुत करते हुये विद्या ने कहा – ''देखो विज्ञान, मैं भी तो कान्वेन्ट स्कूल में ही पढी हूँ, हॉस्टल में भी रही हूँ, वहीं तो हमारा–तुम्हारा प्रथम परिचय हुआ। याद है न ? पर मैंने तो आज तक मदिरा छुई ही नहीं, कभी जुआ खेला ही नहीं। पुरुषों के साथ दोस्ती करने के लिये कभी हाथ आगे बढाया ही नहीं। बताइये ! मेरे व्यक्तित्व के विकास में क्या कमी रह गई ?''

''विद्या ! तुम ठीक कहती हो, पर तुम जैसे कितने हैं ? फिर लड़कियों की बात कुछ और ही है, वे चाहें तो बच सकती हैं, पर लड़कों का अपने साथी–संगियों से बच पाना बहुत कठिन काम है। और फिर हम जैसे बिना पैंदे के मुरादाबादी लोटों की तो बात ही मत करो ! जो किसी का जरा–सा हाथ लगते ही लुढक जाते हैं।''

''अरे विज्ञान ! ये सब तो बच निकलने के बहाने हैं बहाने ! यदि आदमी ठान ले, दृढ संकल्प कर ले तो उसे कोई हिला भी नहीं सकता।

परेशानियाँ तो लड़कों से अधिक लड़कियों को आती है। तुम क्या जानो नारियों की दुर्बलता। यदि जानना हो तो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त से पूछो, उन्होंने साकेत में खींचा है नारी की दुर्बलता का एक शब्दचित्र –

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।

स्त्रियाँ कितनी पराधीन होती हैं, तुम कल्पना भी नहीं कर सकते। हमें एक–एक कदम फूँक–फूँककर रखना पड़ता है। कह नहीं सकते, हमारे साथ कब क्या घट जाये ? अत: हमें तो हिरणियों की भाँति चौबीसों घण्टे चौकन्ना रहना पड़ता है। कदम–कदम पर शंका–आशंकाओं के कांटों का जाल बिछा रहता है स्त्रियों की राह में। जिन नरपिशाचों के बीच में हमें चौबीसों घंटे रहना पड़ता है , उनसे हम कहाँ तक बचें ?

इन नरपिशाचों की मनोवृत्ति तो तुम जानते ही हो। जैसे मांस पर गिद्ध मंडराते हैं, वैसे ही महिलाओं पर चारों ओर ये कामांध नर–गिद्ध मंडराते ही रहते हैं। गिद्ध तो बेचारे मात्र मरे पशुओं का ही माँस नोचते–खाते हैं पर ये कामी कूकर तो जिन्दा नारियों का मांस नोचने को फिरते हैं।

कदाचित् किसी महिला में कहीं कोई कमजोरी देखी नहीं कि उसे डरा–धमकाकर – उसके साथ ब्लैकमेल कर उसे पथभ्रष्ट करने से नहीं चूकते। क्या–क्या बतायें महिलाओं की कमजोरियाँ, फिर भी जो अपने दृढ संकल्प और विवेक के बल पर उन सब बुराइयों से बची रहती है, मैं उन्हें धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकती।

यदि शेष जीवन को सुखी बनाना है और संतान को भी सदाचारी और सुखी व समृद्ध देखना चाहते हो तो तुम्हें अपने बल पर ही अपने साथियों से संघर्ष करना होगा।''

विद्या कहे जा रही थी और आज विज्ञान उसकी सब बातें शान्ति से सुन रहा था।

इस बात से आज विद्या मन ही मन बहुत प्रसन्न थी। बहुत प्रतीक्षा के बाद उसे विज्ञान का मानस कुछ पलटता–सा दिखाई दे रहा था। उचित अवसर पाकर उसने विज्ञान को ज्ञान और सुदर्शन के सम्पर्क बढाने के लिये भी प्रेरित किया।

वह विज्ञान की कमजोरी को पहचानती थी, वह अच्छी तरह जानती थी कि यह विज्ञान का क्षणिक श्मसानिया वैराग्य है। ये कल वातावरण बदलते ही फिर उसी चक्कर में आ जायेंगे। ऐसा तो पहले भी अनेक बार हो चुका है। अत: उसने अपने मन में दृढ निश्चय कर लिया था कि ''इन्हें इनकी प्रतिज्ञा के खूँटे से बाँधे रखने के लिये मुझे सतत प्रयत्नशील रहना होगा।''

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में
38वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर
(रविवार, दिनांक 2 अगस्त से मंगलवार 11 अगस्त, 2015 तक)
शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।
शिविर में पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए – *(चौदहवीं किश्त, गतांक से आगे)*

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पिछले अंक में हमने पढा कि ***''क्षेत्र की अपेक्षा से, मुझसे पृथक बाह्य संयोगों की अपेक्षा से, देहादिक की अपेक्षा से या वर्तमान विकारी परिणामों की अपेक्षा से अपनी (आत्मा की) पहिचान करना किस प्रकार दोषपूर्ण है, इसी क्रम में आगे पढिये –***

मनुष्य मात्र मेरा नाम नहीं है, यह तो मेरी (आत्मा) व शरीर की एक मिलीजुली अवस्था का नाम है, जिसे शास्त्रीय भाषा में ''असमानजातीय पर्याय'' कहा जाता है, इसलिए मैं ''मनुष्य भी नहीं''। जिस प्रकार भारत, एशिया अवश्य है, पर भारत मात्र ही एशिया नहीं है, एशिया तो भारत सहित अनेक देशों के समूह का नाम है।

(यह अपने आप में एक बड़ा विषय है, जिस पर पृथक् से चर्चा अपेक्षित है और हम यथास्थान यह चर्चा करेंगे ही।)

अब तक की बात तो आपको सहज ही स्वीकृत हो गई क्योंकि यह सब आपका अनुभूत विषय है, हम सभी इस मनुष्य जीवन और इसकी विभिन्न अवस्थाओं से अच्छी तरह परिचित हैं, पर अब इससे आगे की यात्रा कठिन है।

अरे भाई ! जैसे हमारे अन्य नाम पल–दोपल, दिन–दोदिन या वर्ष–दो वर्ष के लिए उपयुक्त से लगते हैं, उसी प्रकार यह 'मनुष्य' नाम भी मात्र उन 100–50 वर्षों के लिए ही उपयुक्त लगता है, मात्र तब तक, जब तक हम इस मनुष्य देह में रहेंगे। न तो इससे पहले और न ही इसके बाद; क्योंकि इस जन्म से पहिले भी हम तो थे ही, हालांकि उस समय हम मनुष्य न भी हों और इसी तरह इस जीवन के बाद भी हम तो रहेंगे ही चाहे मनुष्य रहें या न रहें। तब हमारा 'मनुष्य' नाम भी सही कैसे कहा जाएगा ?

अब यदि मैं यह कहूँ कि नहीं, 'मैं' मनुष्य भी नहीं; क्योंकि आज से 1000 वर्ष पूर्व मैं मनुष्य नहीं था, हालांकि 'मैं' तब भी था। आज से 1000 वर्ष बाद भी मैं मनुष्य नहीं रहूँगा हालांकि 'मैं' तब भी रहूँगा। क्या यह आपको स्वीकृत होगा ?

किसी को यह स्वीकार करने में तो परेशानी नहीं होगी कि '1000 वर्ष पूर्व मैं मनुष्य नहीं था और 1000 वर्ष बाद भी मैं मनुष्य नहीं रहूँगा' पर यह बात स्वीकार करने से सभी हिचकने लगेंगे कि 'मैं 1000 वर्ष पूर्व भी था और 1000 वर्ष बाद भी रहूँगा'।

क्यों ?

क्योंकि हमारा ज्ञान सीमित है और हमारे पास ऐसा कोई साधन नहीं है, जिसके द्वारा हम यह जान और पहिचान सकें कि विभिन्न समय और स्थान पर विभिन्न रूपों में (विभिन्न शरीरों या योनियों में) विद्यमान यह आत्मा एक ही है, तब आखिर हमें इस बात पर भरोसा कैसे हो ?

बस इसीलिये अधिकतम लोग तो इस बात से साफ–साफ इन्कार ही कर देंगे कि इस जन्म से पूर्व भी 'मैं' था और मृत्यु के बाद भी 'मैं' रहूँगा।

प्रश्न यह है कि क्या हमारा यह इन्कार उचित है ?

क्या यह उचित है, क्या यह हमारे हित में है कि हम अपनी सत्ता से ही इन्कार कर दें ?

आप कह सकते हैं कि सत्ता सिद्ध ही कब हुई है जो हम स्वीकार करें।

पर मैं पूछता हूँ कि ***यह भी कब और कहाँ सिद्ध हुआ है कि 'मैं नहीं था और मैं नहीं रहूँगा' तब तू इन्कार भी कैसे कर सकता है ?***

अरे ! लोक में तो तू ऐसी किसी वस्तु पर से अपना दावा कभी नहीं छोड़ता है जिनपर तेरा होने का तुझे शक भी हो जाये। उनके लिए तू सारी दुनिया के साथ अनेक वर्षों तक लड़ता है, जीवनभर लड़ता है। यहाँ तेरी अपनी सत्ता, तेरा अपना अस्तित्व ही दांव पर लगा है और तुझे उसकी परवाह ही नहीं ?

अरे भोले ! तू ऐसा अविवेकपूर्ण व्यवहार कैसे कर सकता है ? इससे तेरा त्रैकालिक हित–अहित जुड़ा हुआ है। यह तेरे हित की बात है। इसमें किसी और का नहीं तेरा हित है, मात्र तेरा अपना।

अन्य सब काम छोड़कर सबसे पहिले यह निर्णय करना ही योग्य है, यही, मात्र यही तेरा (हमारा सबका) प्रथम कर्तव्य है और तेरी दृष्टि में यह कोई कार्य ही नहीं है। यह तो इस जीवन में तेरी "to do" लिस्ट में ही नहीं है ? क्या यह तेरा घोर अविवेक नहीं है ? क्या यह तेरी अपनेआप के प्रति घोर उपेक्षा नहीं है ? यदि इसे नहीं तो फिर शत्रुता कहते किसे हैं ?

क्या यह तेरा स्वयं अपने प्रति घोर शत्रुतापूर्ण व्यवहार नहीं है ?

अरे ! तेरा सबकुछ लुटा जा रहा है, तू पूरा का पूरा लुटा जा रहा है और तुझे होश ही नहीं है !

अरे ! इसे ही तो अनन्तानुबंधी क्रोध (अनन्तानुबंधी कषाय) कहते हैं।

''मैं इस मनुष्य जीवन के पूर्व भी था और इसके बाद भी रहूँगा'' हमारे कल्याण के लिए, हमारे हित में इस तथ्य की स्वीकृति ही सबसे महत्वपूर्ण है; क्योंकि तभी मैं अपने (आत्मा के) त्रैकालिक अविनाशी कल्याण के लिए प्रवृत्त होऊँगा और अपना समय मात्र अपने आज के लिए, अपनी वर्तमान पर्याय के लिए, इस मनुष्य भव के हित के लिए बर्बाद नहीं करूँगा।

जाहिर है कि यदि मैं इस मनुष्य जीवन से पूर्व व इसके बाद अपने अस्तित्व से ही साफ–साफ इनकार करता रहा या उसके बारे में सन्देह की स्थिति में ही बना रहा तो फिर मैं उसके बारे में कुछ सोचूंगा ही क्यों, उसके लिए कुछ करूँगा ही कैसे ?

इस जीवन में मेरी जीवन शैली कैसी हो, इस जीवन में ***मेरा कर्तव्य क्या हो यह निर्णय करने के लिए यह निर्णय होना अत्यंत आवश्यक है कि मैं इस जीवन से पूर्व था कि नहीं और इस जीवन के बाद रहूँगा कि नहीं। मैं अनादि–अनंत हूँ या नश्वर ?***

प्रश्न तो यह है कि आखिर इस बात का निर्णय हो कैसे ?

इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए पढें इस शृंखला की अगली कड़ी। ***(क्रमशः)***

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा जिनवाणी संरक्षण के क्षेत्र में अभिनव पहल

क्या आपके यहाँ धार्मिक पत्र-पत्रिकायें आती हैं ?

क्या उन पत्र-पत्रिकाओं की यथा-योग्य विनय नहीं कर पा रहे हैं ?

क्या आप अपने घर या जिनमंदिर में एकत्रित पत्र-पत्रिकाओं का योग्य समाधान चाहते हैं तो अब आप निश्चिंत हो जाईये।

जिनवाणी संरक्षण केन्द्र

अनेक विद्वानों एवं प्रबुद्ध साधर्मियों के विचारों के अध्ययन के पश्चात् हमारी संस्था ने आपके इस विकल्प के उचित समाधान के लिये जबलपुर में जिनवाणी संरक्षण केन्द्र की स्थापना की है जिसके माध्यम से इन पत्र-पत्रिकाओं का उचित समाधान किया जायेगा। आप अपनी पुरानी पत्र-पत्रिकायें हमें भेज सकते हैं।

कैसे भेजें पत्र-पत्रिकायें –

- सर्वप्रथम आप हमसे सम्पर्क करें।
- हम आपके नगर के एक साधर्मी से अपने प्रतिनिधि के रूप में जिनवाणी संरक्षण प्रभारी के तौर पर सहयोग ले रहे हैं। आप अपनी पत्र-पत्रिकायें निर्धारित दिवस पर हमारे प्रतिनिधि के पास जमा करा दें और प्रतिनिधि सभी साधर्मियों की पत्र-पत्रिकायें एकत्रित करके हमें भेजेंगे।
- जिन नगरों में हमारे प्रतिनिधि नहीं हैं वहाँ के साधर्मी हमसे सम्पर्क करके अपनी पत्र-पत्रिकायें सीधे हमें भेज सकते हैं। ग्रन्थ अथवा साहित्य स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

साथ ही ये निवेदन भी स्वीकार करें –

- यदि आपके परिवार के अनेक सदस्यों के नाम से एक ही पत्र-पत्रिका आती है अथवा एक सदस्य के नाम से एक से अधिक पत्र-पत्रिकायें आती हैं तो सम्बन्धित पत्रिका के प्रबंधक से विशेष अनुरोध करके अतिरिक्त प्रति बंद करायें।
- जिन पत्र-पत्रिकाओं को आपके परिवार में कोई नहीं पढ़ता उन्हें भी बंद करायें।

यह प्रयास करके आप परोक्ष रूप से जिनवाणी के विनय में सहभागी बन सकते हैं।

आशा है दिगम्बर जैन समाज के साधर्मी जिनवाणी संरक्षण की इस पवित्र भावना में सहयोग प्रदान करेंगे।

316, मिश्र बन्धु कार्यालय के सामने,मेन रोड, दीक्षितपुरा, जबलपुर (म.प्र.)
मो. 9300642434 Email- kahansandesh@gmail.com

निवेदक

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुम्बई

संयोजक - विराग शास्त्री, जबलपुर मोबा. 9300642434 kahansandesh@gmail.com

दीक्षान्त समारोह संपन्न

मेरठ (उ.प्र.) : यहाँ दिनांक 10 जून को प्रात: नित्यनियम पूजन के उपरांत दीक्षान्त समारोह डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। उक्त अवसर पर बोलते हुए टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने ज्ञानदान का महत्व बताते हुए इस अद्भुत शिविर के सफल आयोजन के लिये युवा फैडरेशन मेरठ की भूरी–भूरी प्रशंसा की। उन्होंने शिविर में प्रवचनार्थ पधारे विद्वानों और प्रशिक्षण की कक्षाओं के संचालन हेतु पधारे सभी अध्यापकों के योगदान की सराहना की।

जिसमें शिविर की रिपोर्ट बताते हुए पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने बताया कि प्रशिक्षण–शिविर में उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, दिल्ली आदि स्थानों से बालबोध प्रशिक्षण में उपस्थित 240 विद्यार्थियों में से 198 छात्रों को प्रशिक्षण हेतु प्रवेश दिया गया, जिनमें से 159 छात्रों ने परीक्षा दी। इनमें से 85 ने विशेष योग्यता, 69 ने प्रथम श्रेणी, 04 ने द्वितीय श्रेणी एवं 1 ने तृतीय श्रेणी से परीक्षा उत्तीर्ण की। 39 विद्यार्थी अनुपस्थित रहे।

बालबोध प्रशिक्षण में प्रथम स्थान राखी जैन सुपुत्री श्री संजीव जैन मेरठ ने, द्वितीय स्थान मयंक जैन पुत्र श्री मनोजकुमार जैन सिवनी ने एवं तृतीय स्थान कु.अंकिता जैन सुपुत्री स्व. श्री महेन्द्रकुमार जैन मुजफ्फरनगर ने प्राप्त किया।

प्रवेशिका प्रशिक्षण में 47 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया, जिनमें से 39 ने परीक्षा दी। इनमें से 12 ने विशेष योग्यता, 18 ने प्रथम श्रेणी, 7 ने द्वितीय श्रेणी एवं 2 ने तृतीय श्रेणी से परीक्षा उत्तीर्ण की। 8 विद्यार्थी अनुपस्थित रहे। प्रवेशिका प्रशिक्षण में प्रथम स्थान सोमिल जैन पुत्र स्व.श्री सुनील जैन दलपतपुर ने, द्वितीय स्थान ऋषभ जैन पुत्र श्री राकेश जैन मंगलायतन एवं तृतीय स्थान श्रीमती नीलिमा जैन धर्मपत्नी श्री संजय जैन इन्दौर ने प्राप्त किया।

अन्त में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का दीक्षांत भाषण हुआ, जिसमें उन्होंने सभी प्रशिक्षणार्थियों ने जो ज्ञान प्राप्त किया है, उसे पाठशाला के माध्यम से सभी को बांटने की प्रेरणा दी।

ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना ने भी इस अवसर पर अपने मार्मिक उद्बोधन में विद्यार्थियों को धर्म से जुड़े रहने और ज्ञान को बांटने की प्रेरणा दी। साथ ही उनका जीवन सदाचारमय रहे इसके लिये स्वाध्याय करने का संकल्प दिलाया। तत्पश्चात् श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर एवं पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने भी संबोधित किया।

कार्यक्रम में सभी विद्वत्वर्ग एवं आयोजक कमेटी के पदाधिकारीगण मंचासीन थे।

प्रशिक्षण शिविर के अध्यापक पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर का भी उनके द्वारा अनेक वर्षों तक प्रदान की गई अमूल्य सेवाओं के लिए डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा शॉल ओढाकर हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

कार्यक्रम का संचालन पीयूष जैन ने किया।

विद्वत्परिषद की बैठक संपन्न

मेरठ (उ.प्र.) : दिनांक 2 जून को विद्वत्परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में संपन्न हुई। सर्वप्रथम डॉ. पी.सी. रांवका द्वारा मंगलाचरण किया गया तथा महामंत्री अखिल बंसल ने गत बैठक की कार्यवाही पढकर सुनाई, जिसका सभी ने अनुमोदन किया। बैठक में विद्यमान विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा की गई, जिसमें यह निर्णय लिया गया कि विद्वत्परिषद के चुनाव अक्टूबर में जयपुर में कराये जायें उसके पूर्व कार्यवाही हेतु दिनांक 10 अगस्त को जयपुर में कार्यकारिणी की बैठक रखने पर सहमति प्रदान की गई। ब्र. यशपाल जैन को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया।

50वाँ स्वर्ण जयन्ती प्रशिक्षण शिविर विदिशा में

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष देश के विभिन्न भागों में संचालित होने वाले प्रशिक्षण शिविरों की शृंखला 50वाँ प्रशिक्षण शिविर अगले वर्ष विदिशा (म.प्र.) में आयोजित होगा।

उक्त शिविर के आमंत्रण हेतु विदिशा समाज के एक विशाल प्रतिनिधि मण्डल का आगमन मेरठ में हुआ और उन्होंने विशाल जनसमुदाय की उपस्थिति में गाजे–बाजे एवं सूखे मेवों से सजे अनेक थालों के साथ सभामंडप में प्रवेश किया, जहाँ युवा फैडरेशन मेरठ के सभी सदस्यों ने उनकी अगवानी की।

खचाखच भरे सभामंडप में विदिशा के प्रतिनिधिमंडल ने आगामी शिविर हेतु आमंत्रण पत्रिका डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समक्ष प्रस्तुत की और उन्होंने सहर्ष अपनी स्वीकृति प्रदान की। इसके पश्चात् मेरठ फैडरेशन के प्रतिनिधियों ने 42'' का सप्तधातु से निर्मित धर्मध्वज भारी करतल ध्वनि के बीच विदिशा से आये प्रतिनिधिमंडल को सौंपा और विदिशा की ओर से पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने उसे स्वीकार किया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी ने बालकों में धार्मिक संस्कार देने में इन शिविरों के महत्वपूर्ण योगदान की चर्चा की और कहा कि यह कार्य निरंतर चलते रहना चाहिए।

उक्त धर्मध्वजा लेकर विदिशा का प्रतिनिधिमंडल जब विदिशा पहुंचा तो रेलवे स्टेशन पर उनकी भव्य अगवानी हुई।

उत्साह के साथ मनाया संकल्प दिवस

दिनांक 25 मई को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का जन्मदिवस जिसे स्नातक परिषद संकल्प दिवस के रूप में मनाती है, प्रात:काल जैसे ही डॉ. भारिल्ल पाण्डाल में आये शताधिक स्नातक विद्वानों सहित पूरी सभा ने खड़े होकर करतल ध्वनि के साथ उनका अभिनन्दन किया और उसके पश्चात सभी स्नातक विद्वानों ने मंच पर उपस्थित होकर आजीवन तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार का संकल्प डॉ. भारिल्ल के समक्ष लिया। इस दृश्य को देखकर पूरी सभा भावविभोर हो गई।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

मेरठ फैडरेशन के सभी नवयुवकों का उत्साह और एकता अद्भुत थी।

इसप्रकार 49वाँ शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का –

38वां राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

देश के विभिन्न भागों से पधारे अनेकों प्रतिनिधि व पदाधिकारी सम्मिलित ● अ.भा.जैन युवा फैडरेशन ''इन्द्रप्रस्थ धर्मांचल प्रान्त का गठन'', 51 सदस्यीय कार्यकारिणी द्वारा शपथ ग्रहण ● गत वर्ष विश्वासनगर दिल्ली में आयोजित श्री वीतराग–विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण एवं प्रशिक्षण शिविर के आयोजन में महत्वपूर्ण योगदान के लिए फैडरेशन की विश्वासनगर दिल्ली शाखा पुरस्कृत ● देशभर से अनेक प्रतिनिधि शामिल।

मेरठ : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 38वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुलजी मोटानी मुम्बई की अध्यक्षता में दिनांक 31 मई 2015 को मेरठ में सानन्द संपन्न हुआ, जिसमें देश के विभिन्न भागों से पधारे अनेक प्रतिनिधियों व पदाधिकारियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री मूलवर्धनजी सर्राफ मेरठ एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री नरेन्द्रजी बिजली वाले, श्री राजीवजी जैन आनंदपुरी, श्री प्रेमचंदजी बावनी, श्री जे.डी. जैन, श्री संजयजी जैन, श्री प्रवीणजी जैन विद्या प्रकाशन आदि महानुभाव मंचासीन थे। विद्वत्गणों के अन्तर्गत पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित प्रकाशदादा मैनपुरी, डॉ. योगेशजी अलीगंज, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली आदि मंचासीन थे।

कार्यक्रम का प्रारम्भ निखिल शास्त्री कोतमा के मंगलाचरण से हुआ और मेरठ शाखा के मंत्री श्री सौरभजी जैन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने फैडरेशन के उद्देश्यों व कार्यक्रमों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ''युवकों की यह सहज वृत्ति है कि वह अच्छे से अच्छा कार्य अकेले रहकर करने से हिचकते है, कहते हैं कि लज्जा आती है जबकि यदि दस–बीस लोग साथ मिल जाएँ तो घ्रणित से घ्रणित कार्य करने से भी नहीं चूकते हैं।

अकेले में इसे पूजन हेतु घर से नहा–धोकर, धोती–दुपट्टा पहिनकर, नंगे पाँव मंदिर तक जाने में लज्जा आती है, हालांकि यह गौरवपूर्ण कार्य है, कोई घ्रणित अपराध नहीं और समूह में होली के दिन फटे हुए कपड़े पहिनकर, अपने मुंह पर कालिख पोतकर, गधे की पीठ पर उल्टा बैठकर भरे बाजार से गुजरने में भी इन्हें संकोच नहीं होता है। फैडरेशन की प्रासंगिकता और उपयोगिता यही है कि समाज के युवक समूह में रहकर अपनी ऊर्जा का सदुपयोग आत्माराधना में कर सकें।''

फैडरेशन के उपाध्यक्ष श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए तत्त्वप्रचार के क्षेत्र में शिक्षा की आधुनिक तकनीक के प्रयोग पर बल दिया।

उनके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, दीपकजी जैन एवं डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर गतवर्ष विश्वासनगर दिल्ली में आयोजित श्री वीतराग–विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण एवं प्रशिक्षण शिविरके आयोजन में महत्वपूर्ण योगदान के लिए फैडरेशन की विश्वासनगर, दिल्ली शाखा को पुरस्कृत किया गया। इसके अन्तर्गत फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुलजी मोटानी ने विश्वासनगर शाखा के अध्यक्ष श्री दीपकजी जैन एवं उनके साथियों को प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया।

प्रशस्ति–पत्र का वांचन श्री शान्तिकुमारजी पाटील ने किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री विपुलजी मोटानी ने युवकों को इस संगठन से जुड़ने का आह्वान किया।

कार्यक्रम का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने एवं आभार प्रदर्शन श्री पीयूषजी शास्त्री ने किया।

'जैनदर्शन का मूल आधार सर्वज्ञता' विषय पर गोष्ठी संपन्न

मेरठ : यहाँ दिनांक 1 जून को अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद एवं टोडरमल स्नातक परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में जैनदर्शन का मूल आधार सर्वज्ञता विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता विद्वत्परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की।

सर्वप्रथम मंगलाचरण पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर द्वारा किया गया। डॉ. नेमचंदजी खतौली, डॉ. मनीषजी जैन खतौली, डॉ. पी.सी. रांवका जयपुर, डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई तथा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने सर्वज्ञता के स्वरूप एवं विभिन्न दर्शनों में सर्वज्ञता की अवधारणा विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

अन्त में डॉ. भारिल्ल ने सर्वज्ञता की विस्तृत मीमांसा की।

गोष्ठी का संचालन महामंत्री अखिलजी बंसल ने एवं आभार प्रदर्शन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

टोडरमल स्नातक परिषद का अधिवेशन संपन्न

मेरठ : यहाँ जैन बोर्डिंग हाउस में आयोजित 49वें प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 25 मई को सायंकाल टोडरमल स्नातक परिषद का अधिवेशन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर उपस्थित स्नातक विद्वानों ने उनके जीवन में टोडरमल सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा प्राप्त शिक्षा की उपयोगिता और उससे जीवन में होने वाले लाभ के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किये, जिससे पूरा सदन प्रभावित हुआ और अनेक विद्यार्थियों ने महाविद्यालय में प्रवेश प्राप्त कर जैनदर्शन शास्त्री बनने की प्रेरणा प्राप्त की।

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह में श्री राजकुमारजी जैन सहारनपुर मुख्य अतिथि एवं श्री जे.डी. जैन मेरठ सहित अनेक विशिष्ट महानुभाव व डॉ. भारिल्ल सहित अनेक विद्वत्गण मंचासीन थे।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

पंचकल्याणक महोत्सव की दिखी झलक

49वें प्रशिक्षण शिविर 'ज्ञान महोत्सव' के नाम से अद्भुत आयोजन के रूप में दर्ज हो गया।

इस ज्ञान महोत्सव में आयोजकों द्वारा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के कुछ विशिष्ट दृश्य दिखाये गये, जिसमें गर्भ कल्याणक के माता-देवी की चर्चा, पंचकल्याणक की इन्द्रसभा और पालना झूलन, तपकल्याणक के लौकान्तिक देवों की अनुमोदना, ज्ञानकल्याणक का दिव्यध्वनि प्रमाण आदि अनेक दृश्यों को विशाल पाण्डाल के भव्य स्टेज पर अत्यन्त सुन्दरता के साथ प्रस्तुत किया गया, जिन्हें देखने पूरा मेरठ शहर उमड़ पड़ता था। इन कार्यक्रमों की प्रस्तुति को फैडरेशन मेरठ के उत्साही कार्यकर्ताओं के साथ पण्डित अभयकुमारजी देवलाली के निर्देशन में ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर के सहयोग से प्रस्तुत किया गया।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न

मेरठ : यहाँ जैन बोर्डिंग हाउस में प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 9 जून को सायंकाल प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर नेहा जैन मेरठ, सेजल जैन दलपतपुर, कु. राखी जैन मेरठ, विकास जैन कटनी, अभिषेक जैन, जीवेश जैन ध्रुवधाम, सागर चौगुले ध्रुवधाम, रोहित चाकोते ध्रुवधाम आदि अनेक प्रशिक्षणार्थियों ने शिविर के बारे में अपने अनुभव सुनाये। साथ ही सभी प्रशिक्षणार्थियों ने अपने-अपने गांव जाकर पाठशाला प्रारम्भ करने का संकल्प व्यक्त किया।

कार्यक्रम का संयोजन निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर ने एवं संचालन विदुषी जैन बण्डा ने किया।

शोक समाचार

(1) दिल्ली निवासी श्री अजितप्रसादजी जैन (पीतल वाले) का दिनांक 23 मई 2015 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100-1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) ललितपुर (उ.प्र.) निवासी सेठ सुनीलकुमार टडैया का दिनांक 11 मई को 65 वर्ष की आयु में मंदिर में देवपूजा करते समय अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप ललितपुर समाज के आधारस्तम्भ एवं श्री सीमंधर जिनालय के आजीवन सक्रिय कार्याधिकारी थे। साथ ही अनेक सामाजिक एवं शिक्षण संस्थाओं में पदस्थ रहे। आप तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु दृढ संकल्पी एवं निर्भीक-स्पष्ट वक्ता के रूप में जाने जाते रहे। आप नगर के विशिष्ट व्यवसायी स्व. सेठ डालचंदजी टडैया के ज्येष्ठ पुत्र थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1000/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

वेदी प्रतिष्ठा संपन्न

लोनावाला (महा.) : मुम्बई-पूना हाइवे पर स्थित लोनावाला में श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर में दिनांक 29 से 31 मई तक वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट एवं पण्डित हितेशभाई चौवटिया के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त जामनगर के वाधर परिवार द्वारा क्रमबद्धपर्याय नाटक का मंचन भी हुआ।

कार्यक्रम में याग मंडल विधान व श्री महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया। महोत्सव में मुम्बई आदि स्थानों से लगभग 1200 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

कार्यक्रम के अन्तिम दिन वेदीशुद्धिपूर्वक श्री महावीर स्वामी की पाषण की मनोज्ञ प्रतिमा गरजतो ज्ञायक परिवार मुम्बई के सदस्यों द्वारा विराजमान की गई।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी-अनिलजी-दीपकजी धवल भोपाल के सहयोग से संपन्न हुये। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा किया गया।

रत्नत्रय विधान उपलब्ध

पण्डित आशाधरजी द्वारा संस्कृत में विरचित प्राचीन रत्नत्रय विधान का हिन्दी पद्यानुवाद पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा किया गया है। इस अध्यात्मगर्भित विधान में सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के क्रमश: आठ-आठ एवं तेरह अंगों का अतिसुन्दर संक्षिप्त वर्णन किया गया है। 66 पृष्ठीय यह विधान मात्र 10/- रुपये में उपलब्ध है। **प्राप्ति हेतु संपर्क सूत्र** - 09300642434 (विराग शास्त्री, जबलपुर)

प्रकाशन तिथि : 13 जून 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127